Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 03, December 2021
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

भारत में आधुनिक कला का विकास

DR. RITA DHANKAR

Associate Professor, Music Department, Bhagini Nivedita College, University of Delhi, Delhi

शोध सार

विश्व विख्यात कवि रविन्द्रनाथ टैगोर ने 1917 में 'विश्व भारती विश्वविद्यालय' की स्थापना की। उनके भतीजे गजेन्द्रनाथ और अविनेंद्र नाथ, दोनों भाइयों ने सर्वप्रथम आधुनिक भारतीय चित्रकार के रूप में पहचान बनाई। कला के इस विकास और उन्नति के दौर में अकेले टैगोर परिवार की भूमिका प्रमुख रही। आजादी के बाद मुक्त अर्थव्यवस्था के आने से नया बदलाव आया कला के क्षेत्र में इसका परिणाम बहुत उत्साहजनक उत्थान के रूप में हुआ। समकालीन कलाकृतियां पहले से कहीं अधिक बिकने लगीं। इस उत्साहजनक माहौल ने कई नई कला दीर्घाओं के निर्माण में मदद की। अपने देश में इन सफलताओं से उत्साहित और अनुप्राणित, रचनात्मक तथा व्यवसायी कलाकार, लगातार प्रयोग कर रहे हैं। उत्थान व विकास कर रहे हैं। इस तरह समकालीन भारतीय कला को बहुत उत्साहजनक माहौल दे रहे हैं। इक्कीसवीं सदी के इस आशावादी माहौल में भारत के प्रतिभाशाली मेधावी कलाकार आगे बढ़ रहे हैं।

मुख्य शब्द- आधुनिक कला, रविन्द्रनाथ टैगोर।

आजकल कला के क्षेत्र में बहुत उत्साह जनक माहौल है। खास कर पिछले कुछ दशक से भारत में कला का उत्थान हो रहा है। अब कई शहरों में कला दीर्घाओं के आस-पास नये कलाकारों की खुलकर बढ़ोतरी हो रही है। इससे भी रोचक बात यह है कि भारतीय जन मानस आधुनिक कला की अहमियत और कीमत समझने लगा और खरीदने लगा है। कलकत्ता जो बंगाल का प्रमुख शहर है और ब्रिटिश साम्राज्य का मुख्यालय रहा, इस उभार व विकास का केन्द्र बना। उन्नीसवीं शताब्दी के आखिरी चैथाई में इस बंदरगाह वाले शहर में जहां से दुनिया भर का व्यापार होता रहा विशेष उन्नति देखी। इस विकास और उन्नति के दौर में अकेले टैगोर परिवार की भूमिका प्रमुख रही जो कि शाही रहन सहन और अनेक कलाओं में निपुण था। इस परिवार के लोगों ने कविताएं लिखी, नाटक लिखे, गायक हुए और चित्रकारी की। इस परिवार में विश्व विख्यात कवि रविन्द्रनाथ टैगोर हुए जिन्हें 1913 में नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 1917 में उन्होंने महान विश्वविद्यालय ''विश्व भारती विश्वविद्यालय'' की स्थापना की। उनके भतीजे गजेन्द्रनाथ और अविनेंद्र नाथ, दोनों भाइयों ने सर्वप्रथम आधुनिक भारतीय चित्रकार के रूप में पहचान बनाई। हालांकि उनके चाचा भी उनहत्तर साल की आयु में चित्रकारी करते थे। फिर भी इन दोनों को और खास कर अविनेन्द्रनाथ को नया बंगाल या बंगला विद्या के नेतृत्व का श्रेय मिला। उन्हें इस कला को पुनर्जीवित करने का भी श्रेय मिला। कई दशकों से फलती फूलती कला विद्या ''कालीघाट की चटक चित्रकारी'' कलकत्ता में प्रचलित थी। उसी समय अविनेन्द्रनाथ टैगोर ओर हावेल की बंगला विद्या अपनी जगह बना रही थी। कलकत्ते के प्रसिद्ध काली मंदिर के दर्शन को आने वाले यात्रियों के लिये कुछ गुमनाम चित्रकारों ने ये चित्रकारी की ताकि यात्री उन्हें स्मृति चिन्ह के रूप में खरीद सकें। यही चित्र आज उन्नीसवीं सदी के अत्यधिक प्रमाणिक और मौलिक चित्रकारी के रूप में जाने जाते हैं। पर 1930 के बाद कालीघाट के चित्र करीब करीब गायब होने लगे। क्यों अब इस तरह के स्मृति चिन्हों की हजारों की संख्या में छपाई होने लगी जिनको बहुत सस्ते

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 03, December 2021
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

में खरीदा जा सकता था। एक ही चित्रकार जेमिनी राय ने बंगाल चित्रों की दशा पर ध्यान दिया, और उनसे प्रेरित होकर, अनेक विपदाओं को झेलते हुए इसे आगे बढ़ाया, अपने समय का इतिहास रचा।

अविनेन्द्रनाथ के सर्वाधिक लोकप्रिय विद्यार्थी जेमिनी राय (1897-1972) थे। वे एक ग्रामीण परिवार के थे और उनका शुरुआती जीवन विपदाओं और विफलता से भरा था। उनके द्वारा निर्मित पोट्रेट और प्राकृतिक दृश्यों का तैल चित्र भले ही अच्छी रह चित्रित था पर राय की विक्षुब्ध भावना को संतुष्ट नहीं कर पा रहा था। बाद में चित्रकारों के प्रदर्शन में उन्हें रोचकता मिली।

अपने गुरु अविनेन्द्रनाथ और उनके भाई गजेन्द्रनाथ, जिनकी कृतियां पूर्व और पश्चिम में दूर तक गई, से अलग राय को अपनी असंतुष्टि का हल अपने घर के नजदीक गावों में और कालीघाट चित्रों में मिला। राय ने धीरे से उनकी (अविनेन्द्रनाथ और गजेन्द्रनाथ) सादगी, सीधा संगीत और सरल कविता को अपने काम में पिरोया। उन्होंने बने बनाये चित्रपट को छोड़कर कपड़े को, लकड़ी को, या चूने से पुते हुए चटाई केा चित्र का अधार बनाया। मिट्टी और साग सब्जी के रंगों से उनकी अपनी विद्या उभरी, फिर भी वे बंगाल के गावों का और कालीघाट चित्रों का ऋण कभी नहीं भूले।

टैगोर और शेर-गिल

रविन्द्रनाथ जी ने अपने विश्वविद्यालय में ''कला भवन'' नामक एक कला विभाग खोला। उन्होंने चित्रकार श्री नन्दलाल बोस (1882-1966) को इसके संचालन के लिये आमंत्रित किया। इस विभाग को स्वतंत्रता पूर्वक चलाने की छूट देते हुए उन्होंने कुछ मार्गदर्शन दिये, जो कि श्री बोस के मन माफिक ही था, कि शिक्षा व्यापक होनी चाहिए, परंपरा हालांकि बहुत महत्वपूर्ण है फिर भी इसे कलाकार के व्यक्तिगत विकास में बाधक नहीं बनने देना चाहिए। कलाकारों को पश्चिम से या अनेक अन्य श्रोतों से ज्ञान व दक्षता अपनाने के लिये बढ़ावा देना चाहिए। जिससे उनकी कला समृद्ध हो। श्री बोस, जिन्होंने कलकत्ता कला विद्यालय से शिक्षा प्राप्त की और श्री हावेल तथा श्री अविनेन्द्रनाथ के विद्यार्थी रहे, ने इस चुनौति को सहर्ष स्वीकार किया। शां निकेतन में कला विभाग का खुलना भारतीय कला के क्षेत्र में निर्णायक कदम साबित हुआ। 1929 में, सत्तर वर्ष की आयु में श्री रविन्द्रनाथ जो कि शब्दों के महान शिल्पी रहे, ने चित्रकला को अपनाया। कला के इतिहास में शायद ही हुआ हो जब श्री टैगोर, जैसे महान कल्पनाशील व्यक्ति अपने जीवन की संध्या बेला में, रोचक मस्तिष्क और व्यथित हृदय की गहराइयों से विचारों को आश्चर्यजनक चित्रों के रूप में अभिव्यक्त किया हो। जिस साल टैगोर अपने अध्ययन कक्ष में चित्रकारी कर रहे थे उसी साल एक सिक्ख परिवार की सोलह साल की सुन्दर बेटी अमृता शेर गिल अपनी हंगेरियन मां के साथ पेरिस में कला की शिक्षा पाने फ्रांस गई। शेर गिल 1934 में भारत लौटी और शिमला में रहने लगी और चित्रकारी की।

1947, कला के क्षेत्र में एक मोड़

अगर कोई ऐसा समय निश्चित करना चाहे जब आधुनिक भारतीय कला ने विकास की छलांग लगायी, तो यह 1947 का साल ही होगा। 1947, जब अंग्रेजों ने भारत की आजादी स्वीकार की। 1947 को कला के क्षेत्र में मोड़ का साल किसी राजनैतिक कारण से नहीं कहा गया बल्कि इस साल गोवा में 1924 में जन्में श्री एफ.एन. सोजा ने PAG विकासशील कलाकारों के समूह की स्थापना मुंबई में की। इसके पांच अन्य सदस्य थे, एम.एफ. हुसैन (ज.1915), के.एच. आरा (1914-85), एच.ए. गोडे (ज. 1917), एस.के. बक्रे (ज.1920) और एस.एच. रजा (ज.1922) हालांकि बाद में हुसैन ने बहुत ऊंचाई हासिल की और इस समूह के मुख्य कलाकार साबित हुए, फिर भी समूह की स्थापना के समय नौजवान

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 03, December 2021
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

सोजा की सूझबूझ और हिम्मत ने इस समूह को आगे बढ़ाया। इस समूह ने अधिकांश जाने-माने कलाकारों की कृत्तियों को, जिनमें श्री रविन्द्रनाथ टैगोर और शेरगिल भी शामिल हैं, अस्वीकार किया। यह समूह अपने कार्य को व्यापक बनाना चाहता था और दुनिया में कहीं भी होने वाले विकास से जुड़कर अपनी कृतियों को तत्कालीन विश्वव्यापी पहचान देना चाहता था। पर अपने अति उत्साह में वे भूल गये कि उस समय के भीषण विनाशकारी युद्ध की पीड़ा और व्यथा यूरोप के किसी कोने में आधुनिक कला का बीज बो रही है। 1947 में भारत ने भी इस तरह की पीड़ा झेली जब अत्यंत निर्दयता पूर्वक देश का बंटवारा हुआ और पाकिस्तान बना।

प्राथमिकताओं में बदलाव

PAG विकासशील कलाकारों के समूह के बाद भी नये प्रयोग करने की और अपनी पहचान बनाने की चाहत बनी रही, पर अब इस चाहत ने अलग पहचान बनाने का मोड़ ले लिया। 1960 तक भारतीय कलाकार अपराध बोध या दबाव से बाहर निकल चुके थे। यह बदलाव का समय था। यह माध्यम, मार्शल मैकहुन के अनुसार संदेशवाहक बन चुका था। भारत में कोई खास बड़ी बात नहीं हुई पर एक शांत आंदोलन जरुर शुरू हुआ, जिससे व्यक्तिगत शैली को बढ़ावा मिला और नये कलाकारों का नये विचारों को मोका मिला। इस तरह जो नये कलाकार उभर कर आये वे हैं:- सतीष गुजराल (ज.1925), तयाब मेहता (ज.1925), कृष्णन खन्ना (ज. 1925), राम कुमार (ज.1924), अकबर पद्मशी (ज.1928), लक्ष्मण पाई (ज.1926), जहांगीर सबावाला (ज.1922), वी.एस. गोईतोण्डे (ज.1924) तथा कई और।

नई दिशायें

प्रयोग करना कला की जान है। पश्चिमी कलाकार हमेशा से नये प्रयोगों के लिए जाने जाते रहे। इस तरह का एक प्रयोग था अवास्तविकता/काल्पनिकता। भारतीय कलाकारों ने अवास्तविकता/काल्पनियकता को गंभीरता से नहीं लिया। यद्यपि यहां की परंपरा हमेशा से अवास्तविकता/काल्पनिकता में रही है। इसका उदाहरण हमेशा नयापन लिये इस्लामी हस्तलिपी, फुलकारी और रेखा गणितिय चित्रों में मिलता है जो ताजमहल जैसे महान स्मारक में देखे जा सकते हें। हुसैन ने एक बार कहा कि मैं कैसे अवास्तविक/काल्पनिक हो सकता हूँ जब कि मेरे चारों तरफ सौ करोड़ लोगों की वासविकता मौजूद है। शायद, अनजाने ही, उन्होंने यह बात उन अनेक भारतीय कलाकरों की ओर से कही, जो विश्वयुद्ध के बाद के यूरोपिय और अमरिकी अवास्तविक/काल्पनिक कला के विकास को देखकर विचारों में खो जाते थे।

1960 तथा 1970 के दशक में, जैसे कि सब की अन्तरात्मा की सामूहिक जरुरत हो, कि हमें करोड़ों भारतीयों के साथ रहना है, कलाकारों ने निश्चय पूर्वक मानव चित्रकारी का रास्ता चुना। उनका अन्दरुनी विश्वास था कि हमारा भविष्य इसी दिशा में हैं, जिससे वे कभी अलग नहीं हुए।

समकालीन भारतीय कला का भविष्य

1990 के दशक में मुक्त अर्थव्यवस्था के आने से नया बदलाव आया। इसका प्रभाव धीरे-धीरे भारत के अन्य क्षेत्रों में फैलने लगा। कला के क्षेत्र में इसका परिणाम बहुत उत्साहजनक उत्थान के रूप में हुआ। समकालीन कलाकृतियां पहले से कहीं अधिक बिकने लगीं। इस उत्साहजनक माहौल ने कई नई कला दीर्घाओं के निर्माण में मदद की। इनमें से प्रमुख हैं, दिल्ली में वडेरा गैलरी, कलकत्ता के CIMA में राखी सरकार, मुंबई में पुंडोले गैलरी।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 03, December 2021
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी समकालीन भारतीय कला की मांग बढ़ने लगी। 1982 में इंगलैण्ड में आयोजित बहुत बड़ा ''भारत-उत्सव'' के दौरान रायल अकादमी में प्रदर्शनी के ज़रिये भारतीय समकालीन कला का परिचय पश्चिम से हुआ। तब से ऐसे कई प्रदर्शनी का आयोजन हुआ है।

अपने देश में इन सफलताओं से उत्साहित और अनुप्राणित, रचनात्मक तथा व्यवसायी कलाकार, लगातार प्रयोग कर रहे हैं। उत्थान व विकास कर रहे हैं। इस तरह समकालीन भारतीय कला को बहुत उत्साहजनक माहौल दे रहे हैं। इक्कीसवीं सदी के इस आशावादी माहौल में भारत के प्रतिभाशाली मेधावी कलाकार आगे बढ़ रहे हैं।

संदर्भ

आधुनिक भारत की कला, बलराज खन्ना व अजीज खुर्था, थेम्ज व हडसन, 1998
समकालीन भारतीय मूर्तिकला-मद्रास की उपमा, आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस, 1993
यू. विकलमान व एन.ऐजिकिल, आज के कलाकार, मार्ग प्रकाशन, मुम्बई, 1984
गोस्वामी, बी.एन. भारतीय कला का सार, एशिया कला संग्रालय, सेनफ्रान्सिसको, 1986
कपूर, गीता व हुसैन, समकालीन भारतीय कलाकार, वाकिल्स, मुम्बई, 1968